SHODH SAMAGAM
ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

श्री लंका में विदेशी भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण–अधिगम में श्रवण कौशल के अधिकार बनाने में हिंदी वर्णमाला से संबंधित त्रुटियों का व्यतिरेकी विश्लेषण

ब्रेसिल नगॉड वितान, भाषा अध्ययन विभाग,
श्री लंका सबरगमुव विश्वविद्यालय, बेलिहुलऑय, श्री लंका

ORIGINAL ARTICLE

Author
ब्रेसिल नगॉड वितान
E-mail : bresil@ss.sab.ac.lk

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 18/12/2025
Revised on : 19/02/2026
Accepted on : 28/02/2026
Overall Similarity : 00% on 20/02/2026

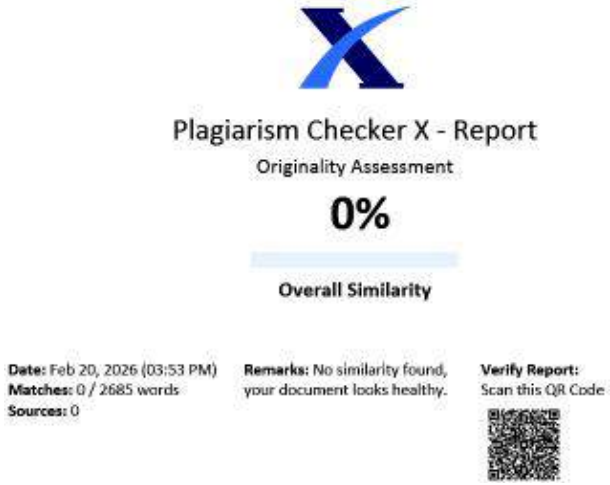

शोध सार

हिंदी के मातृभाषी तथा प्रवासी को हिंदी शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया और अहिंदी भाषी भारतीय तथा विदेशी भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में बहुत बड़ा अंतर होता है। यद्यपि मातृभाषी तथा प्रवासी भारतीयों से भाषा शिक्षण के मुख्य कौशल श्रवण और भाषण अपने परिवार और परिवेश के पड़ोसी तथा परिजनों से ग्रहण किये जाते हैं तथापि उनके वाचन और लेखन कौशल केवल स्कूलों में औपचारिक रूप में सिखाए जाते हैं। द्वितीय या विदेशी भाषा के रूप में शिक्षण में अध्येता को चारों कौशलों का शिक्षण–अधिगम सावधानी और सूक्ष्म शिक्षण प्रविधियों द्वारा अभ्यस्त किया जाना चाहिए वरना उनको भाषा के चरों कौशलों का अधिकार नियमित स्तर पर नहीं लाया जा पाता। अतः जब द्वितीय या विदेशी भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण में अध्येता को हिंदी के स्वर तथा व्यंजन ध्वनियों का शिक्षण उच्चारण स्थान और प्रयत्न के आधार पर वैज्ञानिक तथा भाषाविज्ञान पृष्ठभूमि में होना ज़रूरी है ताकि अध्येता ध्वनियों का सही उच्चारण का अधिकार ग्रहण कर पाते हैं। स्रोत और लक्ष्य भाषाओं में जितना भी व्यतिरेकीपन आ जाए तो अध्येता लक्ष्य भाषा की ध्वनि व्यवस्था का सही उच्चारण ग्रहण करते हैं। ऐसा न होने पर जब शिक्षण कौशलों को व्यवहार में लाया जाता है तब अशुद्धियाँ अधिक पायी जा सकती हैं। प्रस्तुत शोधपत्र में विदेशी भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण–अधिगम में ध्वनियों के श्रवण कौशल से संबंधित अध्ययन किया गया जिसके लिए श्री लंका के 10+ और 11+ सौ विद्यार्थियों का प्रतिदर्श प्रयोग किया गया है। उनके श्रुत लेख अभ्यास से प्राप्त आँकड़े मौलिख हिंदी उच्चारण के साथ तुलनात्मक विश्लेषण किया गया जिससे बोध हुआ कि दोनों भाषाओं की वर्णमालाओं में अधिक समानताएँ हैं फिर भी व्यतिरेकी

स्थानों से संबंधित अशुद्धियाँ अधिक होती है। वस्तुतः इसके निष्कर्ष केवल श्री लंका के संदर्भ में प्रस्तुत किये गए हैं लेकिन सामान्यीकरण के आधार पर दुनिया के कहीं भी द्वितीय या विदेशी भाषा के रूप में हिंदी पढ़ायी जाती है वहाँ इन परिणामों या निष्कर्षों का लागू किया जा सकता है।

मुख्य शब्द

भाषा, स्वर–व्यंजन उचकरण, उचारण स्थान, प्रयत्न.

श्रवण भाषा शिक्षण का प्रमुख कौशल माना जाता है जो कान या श्रवण इंद्रिय से संबंधित है। व्यक्ति द्वारा उच्चरित ध्वनियाँ, ध्वनि लहर या तरंग के रूप में श्रोता का श्रवनेन्द्रिय ग्रहण करता है। अध्येता के भाषा शिक्षण–अधिगम का प्रथम चरण श्रवण है। अध्येता भाषा शिक्षण–अधिगम में श्रवण और वाचन से ग्रहण करता है और भाषण और लेखन से अभिव्यक्त करता है इसलिए शिक्षण–अधिगम में श्रवण और भाषण मुख्य और वाचन और लेखन गौण कौशल माने जाते हैं। अतः शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में श्रवण कौशल को मुख्य माना जाता है और सर्व प्रथम व्यक्ति श्रवण से ही मातृभाषा, द्वितीय भाषा या अन्य भाषा को पहचान लेता है और तदुपरांत रुचि के अनुसार शिक्षण–अधिगम करता है।

अध्येता, मातृभाषा और अन्य भाषा की ध्वनि, पद, वाक्यांश, वाक्य की संरचना का अंतर सर्वप्रथम श्रवण के द्वारा पहचान लेता है। प्रत्येक भाषा की संरचना में अपनी विशिष्टता होती है इसलिए वे आपस में एक दूसरे से भिन्न होती हैं। अन्य भाषा या विदेशी भाषा शिक्षण–अधिगम में शिक्षार्थी मातृभाषा और अन्य भाषा की समान ध्वनियों का अंतर आसानी से समझ लेता है लेकिन असमान या व्यतिरेकी ध्वनियों को समझने के लिए काफ़ी कठिनाइयाँ होती हैं।

शोध के दौरान में यह बोध हुआ कि विदेशी हिंदी शिक्षार्थियों को श्रवण का सम्यक अभ्यास न होना, भाषा परिसर का अभाव और श्रवण कौशल पर अधिक ध्यान न देने के कारण, जब लक्ष्य भाषा की अभिव्यक्ति होती है तब भाषा की अभिव्यक्ति में संरचना की मौलिक इकाइयाँ, जैसे ध्वनि, शब्द, पद और वाक्य की ध्वनियों के उच्चारण पर मातृभाषा का प्रभाव है और उच्चारण सही रुप में नहीं होता था। शिक्षण–अधिगम के प्रारंभ में अध्येता मातृभाषा में सोचता है इसलिए उसकी लक्ष्य भाषा पर मातृभाषा का प्रभाव पड़ता है जिससे प्रारंभ में मुक्त होना असंभव है। मगर जब–जब अध्येता लक्ष्य भाषा अधिगम में पारंगत होता जा रहा है तब–तब मातृभाषा का प्रभाव दूर हो जाता है। इसी संदर्भ में अन्य भाषा के अधिक से अधिक प्रयोग और अभ्यास के द्वारा अध्येता समझ लेता है कि मातृभाषा और अन्य भाषा की संरचनाओं में किन–किन ध्वनियों में व्याघात और व्यतिरकीपन हैं।

इस शोधकार्य में श्रीलंका में हिंदी पढ़ने वाले सौ विद्यार्थियों के श्रवण कौशल से संबंधित प्रतिदर्श लिये गये जिनके सभी शिक्षार्थी कम से कम दो वर्षों से अधिक समय हिंदी से शिक्षण–अधिगम करते आ रहे हैं। उसीके आधार पर ध्वनियों के उच्चारण और श्रुतलेख के आधार पर श्रवण से संबंधित व्यतिरेकी व्याघातों का विश्लेषण किया गया है। इस विश्लेषण में यह देखा गया कि भाषा शिक्षण–अधिगम में जब शिक्षार्थी लक्ष्य भाषा के श्रवण कौशल का अभ्यास करते हैं तब ध्वनियों के स्तर पर किन–किन ध्वनियों से संबंधित व्याघात करते हैं? दुनिया भर की विभिन्न भाषाओं के श्रवण कौशल के विश्लेषण के लिए टेपांकित (रिकार्ड) साधनों के माध्यम से, श्रुतलेख, श्रवण के आधार पर बोधन अभ्यास (Comprihesion), श्रवण के आधार पर रिक्त स्थानों की पूर्ति और भाषण इत्यादि गतिविधियों का प्रयोग किया जाता है।

हिंदी भाषा में ग्यारह स्वर और तैतीस व्यंजन है और सिंहली में अट्ठारह स्वर और बयालीस व्यंजन हैं। यही अंतर के अनुसार श्रवण अभ्यास के विश्लेषण से जाँचने को मिला था कि हिंदी भाषा की ध्वनि व्यवस्था में व्यतिरेकी ध्वनियाँ हैं जो हिंदी श्रवण अभ्यास के श्रुतलेख में कहीं–कहीं व्याघात बने थे। सब से पहले यही पर हिंदी भाषा का शिक्षण–अधिगम होता है अतः हिंदी भाषा की व्यतिरेकी ध्वनियों पर अधिक ध्यान दिया गया है। हिंदी भाषा की ध्वनि व्यवस्था की व्यतिरेकी ध्वनियाँ 'अ', 'ऋ', 'ए' 'ऐ', ','औ' अल्पप्राण–महाप्राण, उत्क्षिप्त व्यंजन, अनुस्वार–अनुनासिकता, संयुक्त अक्षर, श–ष, ण,फ,फ़, और 'र' और 'रेफ़' आदि हैं। सिंहली भाषा की व्यतिरेकी ध्वनियाँ हैं 'अ',ख्र,,ख्रः,, 'ऋ', 'ए'(ह्रस्व ए और दीर्घ ए) 'ऐ', 'ऑ ओ','औ' अल्पप्राण–महाप्राण, अनुस्वार, संयुक्त अक्षर, श–ष, न–ण,प,फ,फ़, ञ(इसके

दो रूप हैं) और 'र' और 'रेफ़' आदि हैं। इसी व्यतिरकीपन की वजह सिंहली शिक्षार्थियों को हिंदी शिक्षण–अधिगम की सुरुआत में शब्दों के उच्चारण संबंधी अधिक व्याघात उत्पन्न होते हैं।

प्रतिदर्श में पचास हिंदी शब्दों और अनुच्छेद का श्रुत लेखन और किसी प्रिय विषय पर तीन मिनिट का भाषण करवाये गये हैं। दोनों भाषाओं की ध्वनि संबंधित व्यतिरेकी स्थानों की त्रुटियों की पहचान के लिए पचास शब्दों का श्रुतलेख करवाया गया है जिसका उद्देश्य केवल ध्वनियों से संबंधित व्यतिरेकी स्थानों का विश्लेषण है। अनुच्छेद के श्रुतलेख से यह अपेक्षित था कि श्रुत अनुच्छेद के व्यतिरेकी ध्वनियों के प्रयोग से पद तथा वाक्यों का किस प्रकार लिपिबद्ध करते हैं? भाषण से यह अपेक्षा थी कि शिक्षार्थी मौखिक अभिव्यक्ति में हिंदी ध्वनियों का उच्चारण किस प्रकार करते हैं? इन अभ्यासों से ज्ञात हुआ है कि शिक्षार्थियों में से अधिक शिक्षार्थियों द्वारा दोनों भाषाओं की व्यतिरेकी या असमान ध्वनियों के स्तर पर अधिक त्रुटियाँ की गयी हैं। अध्येता जो ध्वनि सुनता है उस ध्वनि का लिपिबद्ध रूप ग़लत समझता है। इसी ग़लत समझ का प्रभाव भाषण, वाचन और लेखन पर अधिक पड़ता है। जैसे 'अ','ऋ', 'ऐ', 'औ', महाप्राण, अनुस्वार–अनुनासिकता, उत्क्षिप्त व्यंजन श–ष, न–ण, प–फ और फ़, रेफ और र के विशिष्ट प्रयोग(रकारांश)। इन ध्वनियों को दोनों भाषाओं में देखने में समान होता है फिर भी हिंदी और सिंहली उच्चारण में ध्वनि निर्गम, स्थान, प्रयत्न, ध्वनि बलाघात की असमानताएँ पायी गयी हैं। उसकी वजह से जब हिंदी मौलिक सामग्रियों के आधार पर श्रुतलेख करवाया जाता है तब उपर्युक्त स्थानों से संबंधित त्रुटियाँ अधिक पायी गयी हैं।

दंड आरेख 01 का सूक्ष्म अध्ययन से ज्ञात होता है कि हिंदी के पचास शब्दों के श्रवण अभ्यास से दोनों भाषाओं के व्यतिरेकी ध्वनियों से संबंधित त्रुटियों की मात्रा अधिक हैं। समान इकाइयों की मात्रा अपेक्षाकृत कम है। श्रुतलेख से बोध हुआ है कि जो ध्वनियाँ श्रवण में समझ ली गयी हैं उनका लिपिबद्ध रूप ग़लत है अर्थात् अशुद्ध लिखे जाते हैं।

पचास शब्दों की अशुद्धियों का विश्लेषण

दंड आरेख 01 से प्राप्त संख्याओं से बोध हुआ कि अध्येता लक्ष्य भाषा के शब्दों का श्रवण करते हैं लेकिन उसके अधिकांश शब्दों की ध्वन्यात्मक लिपि के बोध में अशुद्धियाँ अधिक हैं। प्रस्तुत शब्दों की ध्वन्यात्मक अनुलेख के अशुद्ध लिखित विद्यार्थियों का प्रतिशत दिखाया गया है। ज़ख्म (89 प्रतिशत), मोहब्बत (87 प्रतिशत), प्रविष्टि (78 प्रतिशत), लहँदा (14 प्रतिशत), ढूँढ़ना (79 प्रतिशत), माँझना (75 प्रतिशत), पढ़िए (66 प्रतिशत), बौद्धिक (68 प्रतिशत), राष्ट्रकवि (67 प्रतिशत), वृद्धि (73 प्रतिशत), बढ़ाना (68 प्रतिशत), धोखा देना (67 प्रतिशत), पढ़िए (66 प्रतिशत), प्रस्तुतीकरण (57 प्रतिशत), शिक्षण (59 प्रतिशत), भ्रमण (60 प्रतिशत), ढंग (56 प्रतिशत), प्रशिक्षण (61 प्रतिशत), ध्वनि (54 प्रतिशत), मुश्किल (60 प्रतिशत), ऐलान (56 प्रतिशत), घोलना (51 प्रतिशत), भिगोना (51 प्रतिशत), कोशिश करना (57 प्रतिशत), घुमक्कड़ (60 प्रतिशत), अनौपचारिक (50 प्रतिशत), उपलब्धियाँ (72 प्रतिशत)।

इससे बोध होता है कि जिस शब्द की ध्वनियों का श्रवण किया जाता है अध्येता को उसी ध्वनियों का सही रूप की पहचान की जानकारी नहीं है। श्रुत शब्दों के लेखन में ग़लत वर्तनी देखने को मिली हैं। जहाँ अधिकांश अशुद्धियाँ पायी गयी हैं वे सब चर्तित व्यतिरेकी ध्वनियों से संबंधित है।

दंड आरेख 01

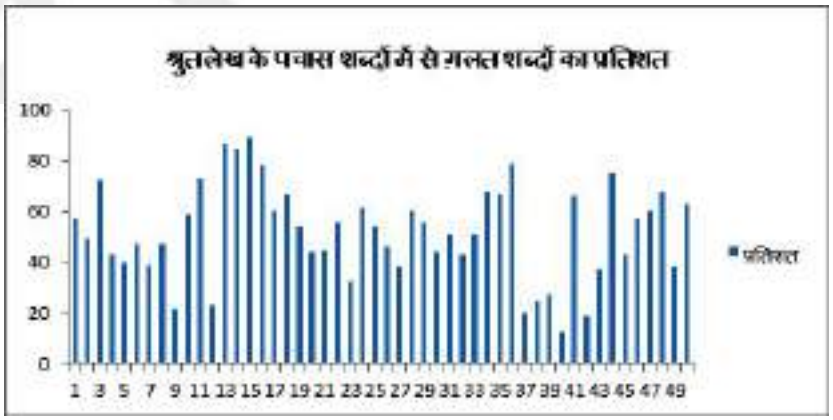

इन शब्दों के विश्लेषण से मातृभाषा सिंहली का प्रभाव द्रष्टव्य है। दंड आरेख 01 में दिखाये गये व्यतिरेकी स्थानों से संबंधित शब्दों में से जो सही पाये गये हैं वे सभी शब्द संस्कृत भाषा के तद्भव या तत्सम रूप है जो सिंहली भाषा में पाये जाते हैं इसलिए इन शब्दों को अधिकतर विद्यार्थी सही लिखते हैं जैसे मूल्याँकन, शक्ति, कृत्रिम, औषध, क्षेत्र, चक्र, ग्रह, उन्नति, ध्वनि, ट्रक, सम्पूर्ण आदि शब्द सिंहली में भी ज्यों का त्यों उपलब्ध है।

तालिका 01: श्रुत लेखन में पचास शब्दों की अशुद्धियों का प्रतिशत

क्रं.	शब्द	अशुद्ध लेखन की संख्या	क्रं.	शब्द	अशुद्ध लेखन की संख्या
1	प्रस्तुतीकरण	57 प्रतिशत	26	ट्रक	46 प्रतिशत
2	मूल्यांकन	49 प्रतिशत	27	औषध	38 प्रतिशत
3	उपलब्धियाँ	72 प्रतिशत	28	मुश्किल	60 प्रतिशत
4	गुड़िया	43 प्रतिशत	29	ऐलान	56 प्रतिशत
5	शक्ति	40 प्रतिशत	30	अनुप्रयुक्त	44 प्रतिशत
6	शिक्षार्थी	47 प्रतिशत	31	घोलना	51 प्रतिशत
7	कृत्रिम	39 प्रतिशत	32	खींचना	43 प्रतिशत
8	क्षेत्र	47 प्रतिशत	33	भिगोना	51 प्रतिशत
9	चक्र	22 प्रतिशत	34	बढ़ाना	68 प्रतिशत
10	शिक्षण	59 प्रतिशत	35	धोका देना	67 प्रतिशत
11	वृद्धि	73 प्रतिशत	36	ढूँढ़ना	79 प्रतिशत
12	ग्रह	23 प्रतिशत	37	धोना	20 प्रतिशत
13	मोहब्बत	87 प्रतिशत	38	समझना	25 प्रतिशत
14	लहँदा	84 प्रतिशत	39	नफ़रत करना	27 प्रतिशत
15	ज़ख्म	89 प्रतिशत	40	रुपया	13 प्रतिशत
16	प्रविष्टि	78 प्रतिशत	41	पढ़िए	66 प्रतिशत
17	भ्रमण	60 प्रतिशत	42	पीजिए	19 प्रतिशत
18	राष्ट्रकवि	67 प्रतिशत	43	मरम्मत करना	37 प्रतिशत
19	प्रदूषण	54 प्रतिशत	44	माँझना	75 प्रतिशत
20	व्यवस्था	44 प्रतिशत	45	घूमना	43 प्रतिशत
21	डमरू	45 प्रतिशत	46	कोशिश करना	57 प्रतिशत
22	ढंग	56 प्रतिशत	47	घुमक्कड़	60 प्रतिशत
23	उन्नति	33 प्रतिशत	48	बौद्धिक	68 प्रतिशत
24	प्रशिक्षण	61 प्रतिशत	49	सम्पूर्ण	38 प्रतिशत
25	ध्वनि	54 प्रतिशत	50	अनौपचारिक	63 प्रतिशत

तालिका 02: श्रुतलेख अभ्यासों के शब्दों की ध्वनियों की अशुद्धियों की मात्रा

अशुद्धियों के स्थान	अध्येताओं की संख्या
अल्पप्राण–महाप्राण	100
बारहखड़ी	68
अनुस्वार–अनुनासिकता	62
श–ष	46
न–ण	54
प,फ,फ़	51
संयुक्त अक्षर	71
उत्क्षिप्त व्यंजन	62
ऋ	87
ए–ऐ	58
ओ–औ	68
र	44
रेफ़	58

(क) श्रुतलेख अभ्यासों में स्वर ध्वनियों की अशुद्धियाँ

प्रतिदर्श के अनुसार 87 विद्यार्थियों में'ऋ' ध्वनि से संबंधित व्यतिरेकी अशुद्धियाँ पायी गयी हैं।

प्रतिदर्श के अनुसार सिंहली अध्येताओं के 'ऋ' ध्वनि संबंधित अशुद्ध प्रयोग

सिंहली विद्यार्थियों के अशुद्ध प्रयोग: व्रिदधि/ व्रधि/ क्रितिम/ विस्तरित/ वीसत्रित/ विसत्रित्त /स्रिस्टि/ स्सिस्टि/ स्रसटि/ स्रस्टि क्रितियाँ/ क्रतियाँ।

मानक प्रयोग: वृद्धि/ कृत्रिम/ विस्तृत/ सृष्टि/ कृतियाँ।

प्रतिदर्श के अनुसार 58 विद्यार्थियों में 'ए'–'ऐ' ध्वनियों से संबंधित व्यतिरेकी अशुद्धियाँ पायी गयी हैं।

प्रतिदर्श के अनुसार सिंहली अध्येताओं के 'ए' तथा 'ऐ ' संबंधित अशुद्ध प्रयोग

सिंहली विद्यार्थियों के अशुद्ध प्रयोग: एलान/ऐलान/आलान/केसे/ एसा/ जेसा/ वेध्य/ नेना

मानक प्रयोग: ऐलान/कैसे/ ऐसा/ जैसा/ वैद्य/ नैना

प्रतिदर्श के अनुसार 'औ' ध्वनि से संबंधित व्यतिरेकी अशुद्धियाँ 68 विद्यार्थियों में पायी गयी हैं।

प्रतिदर्श के अनुसार सिंहली अध्येताओं के 'औ' ध्वनि संबंधित अशुद्ध प्रयोग

सिंहली विद्यार्थियों के अशुद्ध प्रयोग: अनोपचारिक/बोदधिक/ बौदधिक/ ओषध/ ओर / विधाऔं

मानक प्रयोग: अनौपचारिक/ बौद्धिक/ औषध/ और/ विधाओं

(ख) श्रुतलेख अभ्यासों में व्यंजन ध्वनियों की अशुद्धियाँ

अल्पप्राण और महाप्राण ध्वनियों से संबंधित निम्न उल्लिखित व्यतिरेकी अशुद्धियाँ सभी विद्यार्थियों में पायी गयी हैं।

प्रतिदर्श के अनुसार सिंहली अध्येताओं के अल्पप्राण–महाप्राण का अशुद्ध प्रयोग

सिंहली विद्यार्थियों के अशुद्ध प्रयोग: मूल्यांखन/ बीगा/ बिगोना/ दर्म/प्रमुक/ कासकर/ कायसतों/बारत/बाशा/लगबग/बगवान/इच्चा/अथिति/जलोधर/सर्वादिक/विदाओं/काताकार

मानक प्रयोग: मूल्याँकन/ बीघा /भिगोना/ धर्म/ प्रमुख/ खासकर/ कायस्थों/ भारत/ भाषा लगभग/ भगवान/ इच्छा/ अतिथि/ जलोदर/ सर्वाधिक/ विधाओं/ कथाकर

प्रतिदर्श के अनुसार उत्क्षिप्त व्यंजन संबंधित व्यतिरेकीअशुद्धियाँ 62 विद्यार्थियों में पायी गयी हैं।

प्रतिदर्श के अनुसार सिंहली अध्येताओं के उत्क्षिप्त व्यंजन संबंधित अशुद्ध प्रयोग

सिंहली विद्यार्थियों के अशुद्ध प्रयोगः पहाड/बडा/गुडिया/बढावा/ढ़ंग/ड़मरू/डूंढना/पढिए

मानक प्रयोगः पहाड़/ बड़ा/ गुड़िया/ बढ़ावा/ढ़ंग /डमरू/ढूँढ़ना/ पढ़िए

प्रतिदर्श के अनुसार 'श' और 'ष' ध्वनियों से संबंधित व्यतिरेकी अशुद्धियाँ 46 विद्यार्थियों में पायी गयी हैं।

प्रतिदर्श के अनुसार सिंहली अध्येताओं के 'श' तथा 'ष' संबंधित अशुद्ध प्रयोग

सिंहली विद्यार्थियों के अशुद्ध प्रयोगः बाशा/ प्रदूशन/ आदर्ष/ दृष्य/ निशकर्ष/ विषेश/ स्रश्टी/ मुंषि/ मुंषी/ औशध/ औश्ध

मानक प्रयोगः भाषा /प्रदूषण/ आदर्श/दृश्य /निष्कर्ष/विशेष /सृष्टि/ मुंशी/ औषध

प्रतिदर्श के अनुसार अनुस्वार और अनुनासिकता से संबंधित व्यतिरेकी अशुद्धियाँ 62 विद्यार्थियों में पायी गयी हैं।

प्रतिदर्श के अनुसार सिंहली अध्येताओं के अनुस्वर–अनुनासिकता संबंधित अशुद्ध प्रयोग

सिंहली विद्यार्थियों के अशुद्ध प्रयोगः गाव/गांव/मे/ मूल्याँकन/ डूंढना/ हंसना/हँस (पक्षी के अर्थ में)/ सन्स्मरण/ उन्हे/ गुड़ियान/ आंख/ प्रेमचन/ प्रेमचं

मानक प्रयोगः गाँव/ में/ मूल्यांकन/ ढूँढ़ना/ हँसना/हंस (पक्षी के अर्थ में) /संस्मरण/उन्हें/ गुड़ियाँ/ आँख/ प्रेमचंद

प्रतिदर्श के अंतर्गत पचास शब्दों में 'नफ़रत' शब्द के लेखन में 27:विद्यार्थियों में'फ़' और 'फ'ध्वनियों से संबंधित व्यतिरेकी अशुद्धियाँ पायी गयी हैं।

प्रतिदर्श के अनुसार सिंहली अध्येताओं के 'फ़' तथा 'फ' संबंधित अशुद्ध प्रयोग

सिंहली विद्यार्थियों के अशुद्ध प्रयोगः फूल/ फूल/ फुल /निष्फ़ल/ फ़ल /पल/ नफ्रत/ सिर्फ

मानक प्रयोगः फूल (flower)/पूल(waterpool)/पुल (bridge)/निष्फल/फल/नफ़रत/सिर्फ़

प्रतिदर्श के अनुसार 'र' ध्वनि के विभिन्न प्रयोग संबंधित व्यतिरेकी अशुद्धियाँ 44 विद्यार्थियों में पायी गयी हैं। शब्दों के श्रुतलेख अभ्यास में 'शिक्षार्थी' शब्द का अशुद्ध लेखन 47 प्रतिशत विद्यार्थियों में पाये गये हैं।

प्रतिदर्श के अनुसार सिंहली अध्येताओं के रेफ संबंधित अशुद्ध प्रयोग

सिंहली विद्यार्थियों के अशुद्ध प्रयोगः शिक्षारती/ शिक्षरथी/ दूरदरशन/ तीरत/ धामिक/ वरग/ हषोल्लास/ फ़रवरी / सिरफ / सरवाधिक/ अक्टूर्ब

मानक प्रयोगः शिक्षार्थी/ दूरदर्शन/ तीर्थ/ धार्मिक/ वर्ग/ हर्षोल्लास/ फ़र्वरी/ सिर्फ़/ सर्वाधिक/ अक्टूबर

प्रतिदर्श के अनुसार 'र' के विशिष्ठ प्रयोग संबंधित व्यतिरेकी अशुद्धियाँ लगभग 58 विद्यार्थियों में पायी गयी हैं जिनका स्वभाव तालिका 13 में उल्लेख किया गया है।

प्रतिदर्श के अनुसार सिंहली अध्येताओं के 'र' के विशिष्ट प्रयोग संबंधित अशुद्ध प्रयोग

सिंहली विद्यार्थियों के अशुद्ध प्रयोगः चकर/ट्क/राष्ट्कवि/ब्रमन/गूह/धरिदर/दरिद/पेमचन/ पैमचन /प्रमचन /समराट/ समरात/ समराद् विस्रित/ विसत्रित्र

मानक प्रयोगः चक्र/ ट्रक/ राष्ट्रकवि/ भ्रमण/ ग्रह/ दरिद्र/ प्रेमचंद/ सम्राट/ विस्तृत

निष्कर्ष

सिंहली–हिंदी भाषाओं की ध्वनि व्यवस्था के व्यतिरेकी स्थानों के कारण अधिकांश शिक्षार्थियों के श्रुतलेख अभ्यासों में 'ऋ, औ, ए–ऐ, श–ष, प–फ़–फ,रेफ और 'र' कारांश, उत्क्षिप्त व्यंजन तथा अल्पप्राण–महाप्राण ध्वनियों

से संबंधित अधिक त्रुटियाँ पायी गयी हैं। विद्यार्थियों द्वारा लिखवाये गये पचास शब्दों में इससे संबंधित अशुद्धियाँ अधिक हैं जो प्रतिदर्श से प्राप्त व्यतिरेकी व्याघातों का उदाहरण उपर्यक्त विश्लेषण और दंड आरेख 01 में दिखाया गया है। विद्यार्थियों से पूछने पर उन लोगों ने बताया कि उन्हें श्रवण का प्रशिक्षण कभी भी नही होता इसलिए श्रुतलेख के लिए मौलिख सामग्रियाँ जब सुनायी जाती हैं तब बिल्कुल समझ नहीं पता कि ध्वनियों का असली स्वरूप क्या है? इसलिए शुरुआत में यही से जो अशुद्धियाँ होती हैं उसका प्रभाव उनके भाषण, वाचन और लेखन पर भी अधिक पड़ता है। अतः देखा जा सकता है कि विदेशों में हिंदी शिक्षण में मौलिक सामग्रियों का श्रवण अभ्यास मुख्य होता है क्योंकि श्रवण शिक्षण कौशलों का मुख्य कौशल माना जाता है।

विदेशी भाषा शिक्षण में शिक्षक को भाषाविज्ञान के अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान का ज्ञान होने से शिक्षण–अधिगम वैज्ञानिन ढंग से किया जा सकता है। विशेषतः शिक्षक को उच्चारण स्थान और प्रयत्न की जनकारी होनी चाहिए। यदि किसी विदेश में कोई भी भाषा सिखायी जाती है वहाँ उस भाषा के लिए विदेशी भाषा शिक्षण के सिद्धांतों के अनुसार प्रशिक्षित मातृभाषी या प्रशिक्षित शिक्षक की नियुक्ति से शिक्षण–अधिगम की समस्याएँ दूर की जा सकती हैं।

संदर्भ सूची

1. द्विवेदी, कपिलदेव (2019) *भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र,* विश्वविद्यालय प्रकाशन, पो. बॉ 1149, विशालाक्षी, भवन, चौक, वाराणसी।
2. सिंह, दिलीप (2010) *अन्य भाषा शिक्षण के बृहत संदर्भ,* वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली।
3. पाण्डेय, के. पी (1991) *द्वितीय भाषा शिक्षण में अभिक्रमित अधिगम की तकनालोजी,* केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, हिंदी संस्थान मार्ग, आगरा।
4. जैन, महावीर सारन (2006) *व्यावहारिक हिंदी संरचना और अभ्यास,* तृतीय सम्पादन, केन्द्रीय हिंदी संस्थान, संस्थान मार्ग, कंधारी, आगरा।
5. Dissanayake, J.B (2006) *Sinhala Aksharа Vicharaya,* Sumith Publication, (117/7), Pirise Mawatha, Kalubovila.
6. Rev. Sumanasara, Induruwe (1995) *Sinhala Vyakarana Dhara,* S. Godage Publicaion, 675, Kularathna Mawatha, Colombo.

****